साहित्य अकादेमी
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 23386623 / 23387064, फैक्स : 23382428, ई–मेल secretary@sahitya-akademi.gov.in

डॉ. के. एस. राव
सचिव

सा.अ./16/14/बी.एस./पी.एन. 24 जून 2015

प्रेस विज्ञप्ति
साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान

साहित्य अकादेमी ने कालजयी और मध्यकालीन साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए वर्ष 2013 (दक्षिणी क्षेत्र) लिए डॉ. के. मीनाक्षी सुंदरम तथा वर्ष 2014 (पूर्वी क्षेत्र) के लिए आचार्य मुनिश्वर झा को चुना है तथा **कुमाउनी** भाषा, जिसे अकादेमी की मान्यता प्राप्त नहीं है, की समृद्धि में बहुमूल्य योगदान हेतु श्री चारु चंद्र पांडे एवं मथुरादत्त मठपाल को संयुक्त रूप से भाषा सम्मान प्रदान करने की घोषणा की है।

प्रत्येक भाषा सम्मान के अंतर्गत पुरस्कार विजेताओं को 1,00,000/– रुपए नकद, एक उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया जाता है। संयुक्त विजेता के मामले में पुरस्कार राशि को समान रूप से दोनों विजेताओं द्वारा साझा किया जाएगा। यह सम्मान भविष्य में कोई तिथि निर्धारित कर एक विशेष समारोह में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा प्रदान किया जाएगा।

भाषा सम्मान विजेताओं का संक्षिप्त जीवन–वृत्त तथा चयन समिति के जिन सदस्यों की अनुशंसाओं पर भाषा सम्मान की घोषणा की गई है, उसका विवरण निम्न प्रकार है :–

डॉ. के. मीनाक्षी सुंदरम का जन्म 1925 में हुआ। आप तमिळ अध्ययन के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान के संस्थापक निदेशक हैं तथा प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य में आपका योगदान अभूतपूर्व है। आपको एक प्राचीन महाकाव्य **सिलाप्पटिकरम** पर महारथ हासिल है। आपके **सिलाप्पटिकरम** पर किए अद्वितीय कार्यों, सिलाप्पटिकरम के लघु पात्रों तथा उन पात्रों की भूमिका आदि पर किए गए कार्यों ने आपको ख्याति दिलाई है। आपने अपने प्रारंभिक कार्यों में चंकम युग के समाज पर आधारित कार्य भी किया था। आपने तिरुक्कुरल पर विद्वत्तापूर्ण निबंध लिखे हैं। आपने मध्यकालीन साहित्य को समृद्ध बनाने हेतु योगदान दिया है तथा कंबर पर किया गया उनका कार्य एक जवलंत उदाहरण है। आपने 16 साहित्यिक कृतियाँ लिखि हैं, आपका योगदान आधुनिक साहित्य (मनोनमणियम–पुरातची–थिरन) तक फैला हुआ है।

आचार्य मुनिश्वर झा का जन्म 1928 में हुआ। आप एक प्रख्यात विद्वान, शिक्षक तथा शिक्षाविद हैं। आप के. एस. डी. संस्कृत विश्वविद्यालय, बिहार के पूर्व कुलपति (1989–1992) रह चुके हैं। आपने संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान दिया है, जिसके लिए आपको वर्ष 2006 में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपकी हिंदी, अंग्रेजी, मैथिली तथा संस्कृत भाषाओं में एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। जिसमें **विद्यापति वनमाया** (मैथिली), **तपासा कवि विद्यापति** (मैथिली), **भू–परिक्रमणम** (संस्कृत) उल्लेखनीय हैं। आपने **मैथिली भाषाकी**, **एवोलियुशन एंड रिकंस्ट्रक्शन ऑफ द मैथिली लैंगुएज** परियोजना पर भी कार्य किया है।

क्रमशः...2

श्री चारु चंद्र पांडे का जन्म 1923 में कसून, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) में हुआ। आपने कुमाउनी भाषा के विकास के लिए बहुत कार्य किया है तथा आपकी प्रकाशित कृतियाँ हैं–*सेज गुमानी, इको फारम्स हिल्स* (अंग्रेज़ी में), *छोड़ो गुलामी खिताब* तथा *अंगवाल*। आपको उमेश डोभाल स्मृति सम्मान तथा उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री मथुरादत्त मठपाल का जन्म 1942 में भिकियासैंण, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) में हुआ। आप एक कवि, शिक्षक तथा कुमाउनी विद्वान हैं। आपकी प्रकाशित कृतियाँ हैं–*आंङ–आंङ चिचेल हैगो* (कविता–संग्रह), *मूक गीत* (कुमाउनी कवि पंडित कृपाल दत्त जोशी के रचना संसार पर आधारित पुस्तक) तथा इसके अतिरिक्त आपकी कई कविताओं के हिंदी अनुवाद भी प्रकाशित हैं। आपको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सुमित्रानंदन पंत पुरस्कार (1989), शेरदा 'अनपढ़' स्मृति सम्मान आदि से सम्मानित किया गया।

भाषा	चयन समिति के सदस्य
कालजयी और मध्यकालीन साहित्य (दक्षिणी क्षेत्र)	प्रो. वेतुरि आनंदमूर्ति डॉ. हम्पा. नागराजय्या डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
कालजयी और मध्यकालीन साहित्य (पूर्वी क्षेत्र)	प्रो. नगेन सइकिया प्रो. बसंत कुमार पांडा प्रो. उदय कुमार चक्रवर्ती
कुमाउनी	डॉ. रमेश चंद्र शाह डॉ. लक्ष्मण सिंह बिष्ट 'बटरोही' डॉ. हरि सुमन बिष्ट

प्रकाशन/प्रसारण हेतु जारी।

(के. श्रीनिवासराव)

क्रमशः...2